

बाल विज्ञान पत्रिका, जुलाई 2023

# चंकमंक

बदरा-बदरी

प्रभात

बदरा-बदरी  
लेकर निकले  
गगरा-गगरी

गगरा-गगरी  
ऐसे छलके  
भर गए सारे  
डबरा-डबरी

मूल्य ₹50

# तुम्ही भी आ॒ उड़ती मछली



1

अरविन्द गुप्ता

जुगाड़: कैंची, पतला कागज़।

इस मछली को बनाना जितना सरल है, इसकी उड़ान उतनी ही अचरज में डालने वाली है। तुम भी इसे बनाने की कोशिश करो।



यहाँ से काटें।

2

यहाँ से काटें।

1

कागज से 2 सेंटीमीटर चौड़ी एक पट्टी काटो। पट्टी की लम्बाई तुम चुन सकते हो।

2

पट्टी के दाँए सिरे के निचले हिस्से को कैंची से आधी दूरी तक काटो। इसी तरह पट्टी के बाँए सिरे के ऊपरी हिस्से को भी आधी दूरी तक काटो।

3

अब कटे हुए दोनों हिस्सों को मोड़कर एक-दूसरे के करीब लाओ और इन्हें आपस में ऐसे फँसाओ कि ये निकलें नहीं।

4

पूरी तरह बनने के बाद तुम्हारी मछली कुछ ऐसी दिखेगी।

4

यदि तुम किसी ऊँची चीज पर खड़े होकर इसे छोड़ोगे तो यह मँडराते हुए नीचे की ओर आएगी।

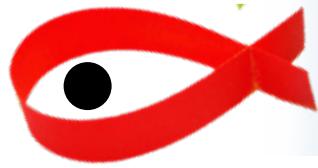
चाहो तो अलग-अलग रंगों और आकारों की मछलियाँ बनाकर देखो।

खिलौने का खजाना किताब में ऐसे ही कई और मजेदार खिलौने बनाने की गतिविधियाँ दी गई हैं। किताब मँगवाने के लिए [orders.pitara@eklavya.in](mailto:orders.pitara@eklavya.in) पर ईमेल करें।



# चक्रमङ्क

इस बार



तुम भी बनाओ - उड़ती मछली - अरविन्द गुप्ता

2

भूलभुलैया

4

बेतवा नदी के किनारे... - भाग । - आस्था चौधरी

5

प्रतापगढ़ का आदमखोर - सैयद मुस्तफा सिराज

8



फिल्म चर्चा - द स्विमर्जि - निधि गुलाटी

12

हाथी के गोबर में प्लास्टिक - रोहन चक्रवर्ती

15

कथों-कथों

16

कविता-डायरी ५ - जंगल के बीच में...

22

- सुशील शुक्ल

24

गणित है मलेदार - कभी जा खतम... - भाग 2

- आलोका कान्हेरे



## चित्रपहेली

30

अमन की कुछ बातें - मैंसेल भेजना

32

- अमन मदान

34

माथापच्ची

36

मेरा पन्ना

43

तुम भी जानो

44

तमीज से - चन्द्रन यादव



## सम्पादक

विनता विश्वनाथन

## सह सम्पादक

कविता तिवारी

## विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

## वितरण

झनक राम साहू

## डिजाइन

कनक शशि

## डिजाइन सहयोग

इशिता देबनाथ विस्वास

## सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क  
(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

आवरण: झील कर्णे, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीओडर्डर/चेक से भेज सकते हैं।  
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

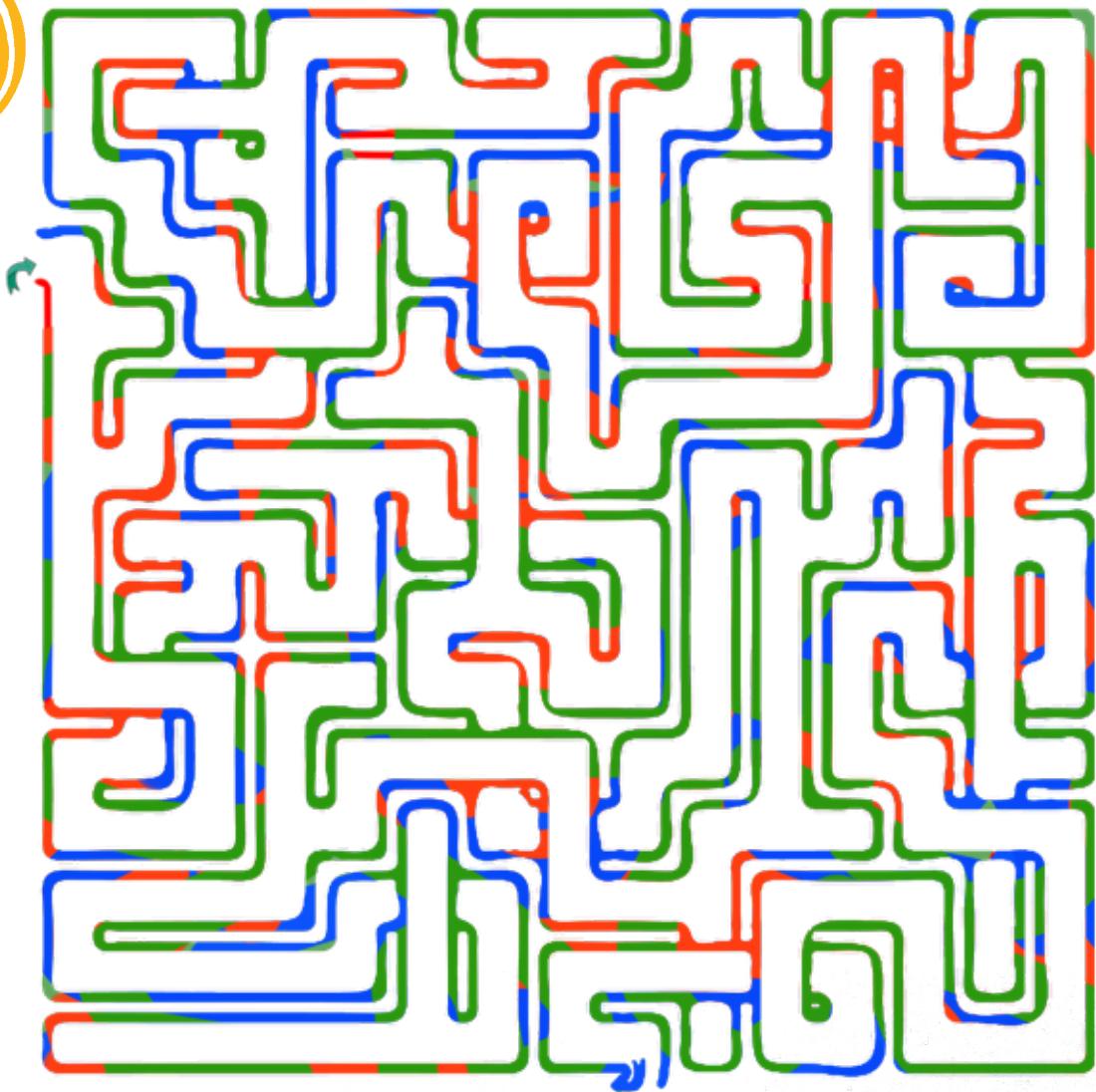
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।



चित्र: सुरगी, सात साल, स्टुडियो रनिंग स्टिच, बैंगलुरु, कर्नाटका



# बेतवा नदी के किनारे-किनारे ओरछा से बुर्हवार तक

भाग ।

आस्था चौधरी  
अनुवाद: कविता तिवारी

एक अनोखी  
यात्रा का विचार

नदियों के किनारे यात्रा करना हमारे  
समाज में कोई नई बात नहीं है। अलग-अलग  
कारणों से लोग ऐसा करते आए हैं। इन्सान की  
ज़िन्दगी में नदी से जुड़ी बहुत-सी कहानियाँ हैं। यहाँ तक  
कि बहुत-सी सभ्यताओं का जन्म भी नदियों के किनारे  
हुआ है चाहे सिन्धु घाटी सभ्यता हो या फिर मेसोपोटामिया।

वर्तमान समय की तेज रफ्तार से भरी ज़िन्दगी में धीमेधीमे प्रकृति की अहमियत को इन्सान भूलते जा रहे हैं और उससे जुड़े बहुत सारे रिश्तों को भी। इन्हीं रिश्तों और मानव-विकास के पहलुओं को समझने के प्रयास में पत्रकार पॉल सालोपेक ने वर्ष 2013 में एक यात्रा शुरू की। सालोपेक अरब, दक्षिण एशिया, चीन, उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका से पैदल यात्रा कर अपनी यात्रा को अर्जेंटीना के टिएरा डेल फ्यूगो नाम की जगह पर सम्पन्न करेंगे। 24,000 किलोमीटर से भी लम्बी इस यात्रा पर वे विश्व के भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृति, खानपान, रहन-सहन और ज़मीन से जुड़े किस्सों के बारे में समझ और लिख रहे हैं।

हमारे देश में ऐसी ही यात्रा सिद्धार्थ अग्रवाल ने अपने संस्थान वेदितम इंडिया फाउंडेशन के ‘मूर्विंग अपस्ट्रीम’ प्रोजेक्ट के तहत की। उन्होंने वर्ष 2016 में गंगा नदी की 3000 किलोमीटर और 2017 में केन नदी की 700 किलोमीटर की पैदल यात्रा की। उन्होंने नदी और नदियों के किनारे रह रहे लोगों की आवाज और उनसे जुड़े रिश्तों का डॉक्यूमेटेशन किया। हमारे देश में न सिर्फ नदियाँ कई किस्म की हैं, बल्कि उनके किनारे रह रहे समुदाय के लोगों में भी विभिन्नता है। जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, जीवन यापन, कृषि, मिट्टी,

यहाँ

तक कि भाषा  
भी एक-दूसरे से अलग-  
थलग हैं।

2017 से लेकर 2019 तक के समय में पॉल सालोपेक की यात्रा भारत से गुजरी। इस दौरान सिद्धार्थ को 6 महीने उनके साथ चलने का मौका मिला। तब सिद्धार्थ ने भारत के युवाओं को नदी यात्राओं पर जाने के लिए प्रोत्साहन और समर्थन देने के लिए ‘मूर्विंग अपस्ट्रीम फैलोशिप प्रोग्राम’ का विचार उनसे साझा किया। इस तरह सालोपेक की यात्रा और वेदितम इंडिया फाउंडेशन की साझेदारी में इस प्रोग्राम की शुरुआत हुई।

2019 से 2023 के बीच 15 युवाओं ने इस प्रोग्राम के तहत भारत की बेतवा और सिंध नदियों की पैदल यात्राएँ सम्पन्न कीं। फैलोशिप की इन यात्राओं के ज़रिए उन्होंने नदी, सभ्यता, पर्यावरण, जल, ज़मीन, खेती, संस्कृति, जलवायु परिवर्तन आदि अनेक पहलुओं पर अपनी समझ बनाई और इन पहलुओं को कई माध्यम से साझा किया।

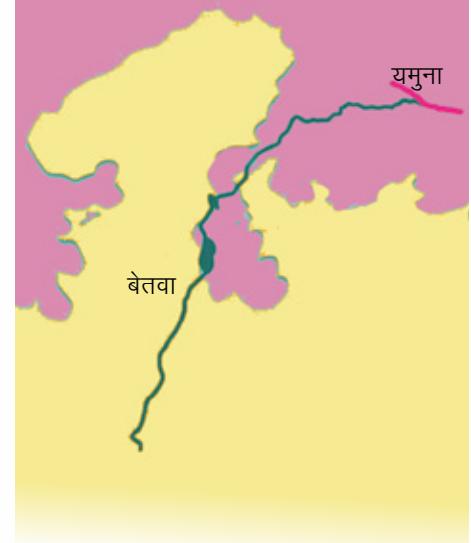
मूर्विंग अपस्ट्रीम फैलोशिप के तहत मैंने और मोहित राव ने बेतवा नदी के किनारे-किनारे पैदल यात्रा की। इसकी कुछ कहानियाँ मेरी इस डायरी के ज़रिए तुम पढ़ोगे।



## पैदल यात्रा की तैयारी

### लखनऊ

जब मुझे बेतवा घाटी की पैदल यात्रा के लिए चुना गया तो मैंने खुद को शारीरिक और मानसिक तौर पर इसके लिए तैयार करने का फैसला किया। जाने से 15 दिन पहले मैंने दिन में दो बार ठहलना शुरू कर दिया – सुबह-शाम दोनों टाइम 4-5 किलोमीटर। यह तैयारी मेरे लिए अपने आप में एक नया अनुभव था। इस क्षेत्र के बारे में और जानने के लिए मैंने काफी कुछ पढ़ने की भी कोशिश की। तब तक मैं कई सारी यात्राएँ और ट्रैकिंग कर चुकी थी, पर यह यात्रा कुछ अलग होने वाली थी। यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र में खानाबदोशों की तरह भटकने जैसी थी।



ओरछा में बहती बेतवा नदी



### 29 नवम्बर, लखनऊ से ओरछा

लखनऊ से झाँसी के बीच कोई खास कनेक्टिविटी ना होने के कारण मुझे 29 नवम्बर की रात की ट्रेन लेनी पड़ी। 8 किलो का बैग उठाए मैं रात में प्लेटफार्म पर ठहल रही थी। मैंने ठहलने की प्रैक्टिस तो की थी, पर मुझमें आत्मविश्वास की कमी थी। मैं ओरछा जाने को लेकर उत्सुक नहीं थी क्योंकि मैं पहले भी वहाँ एक हफ्ता बिता चुकी थी। मैं नदी के किनारे पैदल-पैदल की जाने वाली इस यात्रा को लेकर ज्यादा उत्सुक थी। ट्रेन की पूरी यात्रा के

दौरान मैंने किसी से बात नहीं की। मुझे बुन्देलखण्ड के बारे में मेरे द्वारा पढ़े गए लेखों में से एक का ख्याल आ रहा था। वो लेख पी साईनाथ का था। लेख में उन्होंने इस क्षेत्र के बारे में विस्तृत जानकारियाँ दी थीं – विशेषकर इस बारे में कि कैसे बुन्देलखण्ड ना सिर्फ उत्तर प्रदेश, बल्कि पूरे भारत के सबसे पिछड़े हुए क्षेत्रों में से एक है। इसलिए मैं इस क्षेत्र और उसकी स्थिति से कुछ हद तक वाकिफ थी।

ट्रेन काफी देरी से चल रही थी। देर-सबेर मैं झाँसी स्टेशन पहुँच गई। वहाँ मोहित मेरा इन्तजार कर रहे थे। हमने एक ऑटो लिया और एक घण्टे में हम ओरछा पहुँच गए। शहर को भगवान राम और सीता के विवाह के लिए सजाया गया था। हमारे ऑटो में बैठी महिलाएँ बात कर रही थीं कि कैसे इस समय पूरा शहर सैलानियों और भक्तों से भर जाता है।

## ओरछा में बीता दिन

होटल सनसैट पहुँचकर हमने कुछ देर आराम किया। हमने तय किया कि हम थोड़ी देर ओरछा में ही घूमेंगे। हम जहाँगीर महल और राजा महल गए। वहाँ से हमें बेतवा की एक झलक देखने को मिली। पर वो कुछ खास दमदार नहीं थी।

महल के पास हम गोंड जनजाति के कुछ लोगों से मिले। वे बड़ी कुशलता से ब्रुह से पेंटिंग कर रहे थे। उनकी पेंटिंग प्रकृति के साथ इन्सानों के सदियों पुराने रिश्ते को दर्शाती हैं। उनमें से रंजना ने बताया कि उसने यह कला अपने पिता से सीखी। चटक रंगों से बनी इन पेंटिंग में हाथियों, पक्षियों और जंगल के अन्य निवासियों को उकेरा गया था।

लगभग शाम 5 बजे हमने बेतवा को पूरी तरह देखा। पानी बहुत था। फिर भी नदी छोटी थी और

ओरछा महल के पास पेंटिंग बनाती रंजना

कुछ खास प्रभावशाली नहीं थी। हम चट्टानों पर बैठ गए जो नदी की खासियत मालूम होती है।

पर्यटक और तीर्थयात्री दूसरी चट्टानों पर या नदी पर बने एक संकरे सिंगल लेन कांक्रीट के पुल के किनारे पर बैठे थे। कुछ लोग पानी में मस्ती कर रहे थे। ट्रकों व बसों के हॉर्न की आवाज आ रही थी। लाउडस्पीकर से तैरने के बारे में चेतावनी दी जा रही थी। भव्य पौराणिक विवाह के लिए इकट्ठे हुए हजारों लोगों के क्रियाकलापों से शहर गुलजार हो रखा था।

इस यात्रा के दौरान हमें जगह-जगह पर फ्लोराइड के लिए भू-जल और नदी के पानी की जाँच भी करनी थी। पानी में फ्लोराइड की अधिक मात्रा मनुष्यों में कई बीमारियों के लिए जिम्मेदार है। कहीं भी अगर इसकी मात्रा अधिक मिली तो हम सम्बन्धित संस्थाओं और विभागों को सूचित कर सकते थे। अपने होटल के पास एक हैंडपम्प देखकर हमने पानी की जाँच की प्रक्रिया शुरू की। इसमें हमें बमुश्किल आधा घण्टा लगा। इससे मुझ में अपनी इस यात्रा के दौरान इस प्रक्रिया को दोहराने का विश्वास पैदा हुआ।

फिर हम होटल वापिस आ गए।

**अगला चरण :** पदयात्रा की शुरुआत - पहला दिन, होटल सनसैट ओरछा से खिरखण्ड तक



पहले मालूम होता तो इस बुड्ढे के चक्कर में कभी न पड़ता। इतने सारे बूढ़े लोगों को देखा, गर्मियों में नाती का हाथ पकड़ पार्क में जाकर बैठे रहते हैं और सर्दियों में घर के कोने में शॉल ओढ़कर अखबार पढ़ते हैं। हाँ, दो-चार बुड्ढे नेता बन जाते हैं और देश चलाते हैं। अखबार के लिए खबरें इकट्ठी करने के सिलसिले में उनसे थोड़ी बहुत जान-पहचान भी हुई है। परन्तु कोई भी इस बुड्ढे की तरह पहाड़-जंगलों में जंगली धोड़ की तरह भागा-दौड़ी नहीं करते फिरते, वो भी सिर्फ अपनी दो टाँगों के बल पर। या फिर किसी तितली या पंछी के पीछे बच्चों जैसा हैरान होकर नहीं भागते।

इस बुड्ढे की तो करतूतें ही अद्भुत हैं। वरना किसकी हिम्मत होगी कि जनवरी की इस कँपकँपाने वाली ठण्ड में प्रतापगढ़ के जंगल में कैमरा लेकर देर रात तक बेफिक्र घूमे? वो भी उस जंगल में जहाँ हाल में एक आदमखोर बाघ का दबदबा चल रहा हो।

मूल बांग्ला रचना: सैयद मुस्तफा सिराज़

अनुवाद: कविता मित्र

चित्र: प्रोइति राणु

जंगल में रात को कैमरे की बात सुनकर अगर कोई यह समझे कि ज़रूर पलैश बल्ब की सहायता से जानवरों की तस्वीरें खींची जाती हैं, तो ये बहुत बड़ी गलती होगी। वो कैमरा भी अजीबो-गरीब है। भुतहा कहने में भी मुझे कोई दिक्कत नहीं। क्योंकि उसमें पलैश बल्ब की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती। फिर भी अँधेरे में लेंस के सामने बीस-पच्चीस मीटर की दूरी तक 180 डिग्री के भीतर जो कुछ भी हो, सबकी तस्वीर आ जाती है। शटर दबाने के लिए किसी के बैठे रहने की भी ज़रूरत नहीं। उसमें इलेक्ट्रॉनिक इन्टर्जाम इतना सूक्ष्म और संवेदनशील है कि लेंस के सामने बताई दूरी के अन्दर ज़मीन पर ज़रा-सा कम्पन ही काफी है। जब भी कोई जानवर ज़मीन पर चलता है तो कुछ न कुछ कम्पन पैदा होता है। उसी से शटर क्लिक हो जाता है।

## प्रतापगढ़ का आढ़मरवार



प्रतापगढ़ जंगल के बंगले में वो जब कैमरे का जाल बिछाकर रात दस बजे वापस आए, तब मैं फायर-प्लेस के सामने आराम-कुर्सी पर बैठकर कड़क कॉफी पी रहा था। और दूसरे दिन सुबह वहाँ से भागने की तरकीब सोच रहा था। “कितनी ठण्ड है, बाप रे! बिहार की ठण्ड मशहूर है, मालूम था। लेकिन प्रतापगढ़ का इलाका उत्तरी ध्रुव का छोटा भाई होगा, ये पता नहीं था।”

“हैलो डार्लिंग!” उन्होंने हमेशा की तरह अभिवादन कर टोपी और ओवरकोट उतारा और मेरे पास बैठकर जरा हँसकर कहा, “जयन्त, मुझसे नाराज़ हो क्या?”

उन्होंने एक हाथ मेरे कन्धे पर रखा और दूसरे में कॉफी का मग पकड़कर गम्भीर आवाज़ में कहा, “डार्लिंग! उम्मीद है कि कल सुबह तक मैं तुम्हें एक ऐसी कमाल की तस्वीर दिखा पाऊँगा जिसे देखकर तुम्हारी आँखें खुली की खुली रह जाएँगी। इसलिए कम से कम एक और दिन धीरज से इन्तजार करो। और जयन्त, ऐसा भी हो सकता है कि इस बार तुम प्रतापगढ़ से अपने दैनिक सत्यसेवक के लिए एक रोमांचक खबर साथ ले जाओ।”

उनकी खुशनुमा बातों से जरा भी न पिघलकर मैंने कहा, “और किसकी तस्वीर दिखाएँगे? पिछली रात तो आपके कैमरे ने झरने से पानी पीने आए हिरणों के झुण्ड की तस्वीर ली थी। कल ज्यादा से ज्यादा एक दुबला बाघ दिख जाएगा।”

“सही कहा डार्लिंग!” बुड़ा सफेद दाढ़ी पकड़कर हँसा। फिर स्वभाव के मुताबिक वही हाथ अपने गंजे सिर पर फहराया और कुछ नीचे फेंक दिया। देखा तो लाल रंग का एक कीड़ा था। कई बार गंजे सिर पर मकड़ी का जाल या चिड़िया की बीट भी देखी है। बूढ़े ने कीड़े की हलचल पर नज़र रखते हुए कहा, “बाघ की ही तस्वीर दिखाऊँगा। और वो भी कोई ऐसा-वैसा बाघ नहीं, वही बदनाम आदमखोर बाघ! जिसे मारने के लिए सरकार ने इनाम का ऐलान किया है।”

मैंने चिढ़कर कहा, “अच्छा चलिए मान लिया कि उस आदमखोर बाघ की तस्वीर आपके कैमरे में आ जाएगी। लेकिन आपने उन शिकारी लोगों को क्यों नहीं बताया? वो लोग बाघ को मारने के लिए परेशान हो रहे हैं। आपके सामने ही तो वो दोनों आज शाम को निकल गए। कहीं एक भैंस का बछड़ा बाँधकर पेड़ पर मचान बनाकर सारी रात बैठे रहेंगे। खामख्वाह ठण्ड में तकलीफ होगी।”

उन्होंने मेरी बात का जवाब देने के लिए मुँह खोला ही था कि चौकीदार ने दरवाजे से झाँककर थोड़ा खाँसकर कहा, “हुजूर कर्नल साब! खाना तैयार है। हुकुम होगा तो अभी लावेगा।”

“ज़रूरा!” कहकर हुजूर कर्नल साब यानी मेरे बूढ़े दोस्त कर्नल नीलाद्रि सरकार उर्फ ‘धुरन्धर बूढ़ा’ ने स्वभाव मुताबिक छाती पर क्रॉस बनाया और एक सच्चे आस्थावान की तरह खाना खाने के लिए तैयार हुए।

बंगला एकदम जंगल के बीचों-बीच था। इसीलिए सावधानी बरतने के लिए पूरे बरामदे में जंगला लगा हुआ था। और इतनी ठण्ड की वजह से सारा जंगला ढका हुआ था। बरामदे के एक ओर किंचन था। चौकीदार किंचन के सामने खटिया बिछाकर सोता था। आजकल उस आदमखोर बाघ के आतंक की वजह से और सावधानी के लिए एक टॉर्च और सोटा पास रखता है। बुड़ा कर्नल आदमखोर के डर को नज़रअन्दाज़ कर देर रात तक जंगल में घूमता और सही-सलामत लौट भी आता। चौकीदार बरामदे के ग्रिल का एक छोटा हिस्सा खोलकर हुजूर कर्नल साब को अन्दर आने देता और फिर तुरन्त उस दरवाजे को बन्द कर ताला लगाकर शक की नज़र से देखता रहता। मुझे लगता है, उसकी नज़र में एक ऐसी बेचैनी रहती है कि वह इन्सान देख रहा है या भूत। कर्नल पर उसकी श्रद्धा लगातार बढ़ती चली थी।

चटनी लगी मोटी रोटियों के साथ जंगली मुर्ग के मांस से जमकर पेट पूजा की गई। खाते हुए कर्नल ने मेरी उस बात का जवाब दिया। ‘सही कहा, जयन्त! मिस्टर सेन और मिस्टर दत्त को मुझे बताना चाहिए था कि आप लोग झारने की घाटी में जाल न बिछाकर थोड़ा ऊपर की तरफ आकर बिछाइए। क्योंकि मुझे लगता है कि बाघ वहीं टीले के ऊपर एक गुफा में रहता है। मैंने उसके पैरों के निशान भी ध्यान-से देखे हैं। जंगल-विद्या में मुझे भी थोड़ी बहुत जानकारी है।’

‘तो कहा क्यों नहीं?’

कर्नल हँसे। ‘बिन पूछे खुद से चलकर कहना सही नहीं लगा। और तुमने ज़रूर ध्यान दिया ही होगा कि मिस्टर दत्त कैसे बदतमीज़ किस्म के आदमी हैं। यहाँ आते ही हमें देखकर कैसे नाराज़ हो रहे थे? मिस्टर सेन ने भी कैसे हमें सुनाकर कहा, दो-दो आदमियों का चारा रहते खामख्याह भैंस के बछड़े पर पैसे खर्च करने की क्या ज़रूरत है? यह बात मुझे चुभ गई जयन्ता।’

उनका दुख देखकर मैंने हल्के मिजाज में कहा, “अहा! वो लोग कर्नल नीलाद्रि सरकार नामक मशहूर ‘धुरन्धर बूढ़े’ को नहीं न जानते! अगर जानते होते, तो ज़रूर तमीज़ से बात करते। यह सोचिए कि जिस जंगल में आदमखोर बाघ धूमता हो, वहाँ अगर कोई शौक फरमाते धूमने आए, तो वो चारा नहीं तो और क्या बनेगा?”

परन्तु कर्नल हँसे नहीं। गम्भीरता से गिलास का बर्फीला ठण्डा पानी पूरा निगल गए।

रात के आखिरी पहर में कुछ शोर की आवाज़ से नींद टूटी। जागकर कुछ सैकंड तक मैं भोंदू की तरह ताकता रहा। लालटेन की बत्ती बढ़ाकर कर्नल व्याकुल होकर पुकार रहे थे, “जयन्त! जयन्त!” बाहर चौकीदार एक अनजानी भाषा में चिल्लाए जा रहा था। और फिर कोई ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

कम्बल छोड़कर बाहर निकलना आसान बात नहीं। पर ऐसी परिस्थितियों में सहज-ज्ञान काम करता है। मैं

एकदम से उठ पड़ा। फिर देखा, कर्नल हाथ में लालटेन लिए आगे बढ़कर दरवाजा खोल रहे थे। मैं भी उनके पीछे-पीछे भागा। बरामदे में निकलते ही एक भयंकर नज़ारा दिखाई दिया। ज़मीन पर पैर फैलाए बैठे हुए थे वही शिकारी मिस्टर दत्त और दोनों हाथों से मुँह ढककर बच्चों की तरह रो रहे थे। उनके कपड़े ताज़ा खून से लथपथ थे। पास में दो



राइफल पड़ी हुई थीं। और उनके सामने बेचारा चौकीदार खड़े-खड़े उलझी हुई आवाज में लगातार कुछ बोले जा रहा था, जो समझ नहीं आ रहा था।

कर्नल ने मिस्टर दत्त के कन्धे पर हाथ रख उन्हें हिलाकर कहा, “शान्त हो जाइए मिस्टर दत्त। क्या हुआ वो बताइए।” कर्नल की बात सुनकर मिस्टर दत्त थोड़े शान्त हुए। फिर जोर-से नाक झाड़कर

कहा, “ओ हो हो हो! मैं अब क्या करूँ? क्या करूँ मैं अब? मेरे जीवन भर का साथी, मेरा जिगरी दोस्त अमल..... वो!”

कर्नल ने कहा, “प्लीज मिस्टर दत्त! शान्त हो जाइए, शान्त हो जाइए। और हुआ क्या वो बताइए।”

पेज 18 पर जारी



# द स्विमर्ज़

निधि गुलाटी

रिलीज़ तारीख: 23 नवम्बर, 2022

निर्देशक: सेली एल होसैनी

भाषा: अंग्रेज़ी

निर्माता: अली जाफर, टिम कोल, इरिक फेलनर, टिम बेवन

वितरण: नेटफ्लिक्स



अक्सर कहानी फिल्म का सबसे पावरफुल हिस्सा होती है। द स्विमर्ज़ फिल्म की कहानी भी ऐसी ही है। यह कहानी है सीरिया में रहने वाली दो बहनों, यूसरा और सारा की। यूसरा मर्दिनी एक पेशेवर तैराक है। वो अपनी बड़ी बहन सारा के साथ सीरिया की जंग से बचकर भाग निकलती है और आगे जाकर ओलिम्पिक्स में भाग लेती है। यूसरा का फोकस, उसकी प्रतिबद्धता, बदतर स्थितियों में डटे रहना और अन्ततः अपने लक्ष्य तक पहुँचना इस कहानी का अहम हिस्सा हैं। साथ ही यह कहानी विस्थापन और बुरे से बुरे हालातों से बाहर निकल पाने की भी है।

## सारा का निर्णय

कहानी 2015 के आसपास सीरिया की राजधानी डमस्कस में एक स्विमिंग पूल से शुरू होती है। स्विमिंग पूल में कुछ परिवार मर्स्ती कर रहे हैं। तभी उस पूल में रबर की एक मिसाइल आ गिरती है और एकदम हड़कम्प मच जाता है। यह सीन आने वाले सालों की आहट भी देता है। सीरिया में बिगड़ते हालातों से बच निकलने के लिए सारा अपने घरवालों से कहती है कि वह यूसरा को जर्मनी ले जाएगी। और वहाँ पहुँचकर वह सरकार की मदद से पूरे परिवार को जर्मनी बुलवा लेगी। सारा ठान लेती है कि ऐसे हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते, बम और बन्दूकों से दूर जाना होगा, अपने हालात सुधारने होंगे। और दोनों अपने कज़िन नासिर को साथ ले चल पड़ती हैं।

पर यह सब करना इतना आसान नहीं है। जंग छिड़ चुकी है, और इस सब के बीच ऐसा तो नहीं है कि योजना बनाओ, समान बाँधो, टिकट लो और चल पड़ो। जंग में ना टिकट है, ना ही कोई परिवहन... और वीज़ा भी तो चाहिए एक देश से दूसरे देश जाने के लिए, जो जंग के समय तो आसान नहीं है। ऐसे में ये दोनों बहनें चल देती हैं, बिना जाने कि वे जाएँगी कैसे। ज़रा सोचो, ऐसे कठिन समय में जब देश में जंग छिड़ी हो, इन दोनों के लिए कहीं चल देना कितना मुश्किल रहा होगा।

## बहनों का जोखिम भरा सफर

फिल्म का पहला हिस्सा दोनों बहनों की गज़ब की दृढ़ता की कहानी कहता है। जर्मनी तक पहुँचने के लिए उन्हें पाँच देश पार करने हैं – टर्की, ग्रीस, मैसिडोनिया, हंगरी और ऑस्ट्रिया। वह टर्की तक हवाई यात्रा करती हैं। टर्की से ग्रीस जाने के लिए उन्हें एजियन समुद्र पार करना है। लगभग 18 और शरणार्थियों (रेफ्यूजी) के साथ वे एक छोटी, खुली कश्ती में सवार होती हैं। थोड़ी दूर जाते ही ऐसा लगता है कि कश्ती की मोटर खराब हो गई है और वह डूब ही जाएगी। बिना रक्ती भर हिचकिचाहट के सारा और यूसरा पानी में कूद जाती हैं। और बाकी का सफर तैरकर तय करती हैं।

जितनी तैराकी उन्होंने सीखी थी, उसका इस्तेमाल कर तकरीबन 4 घण्टे समुद्र में तैरते हुए वह कश्ती को किनारे तक खींचती हैं। इस तरह दोनों लड़कियाँ सभी को ज़मीन तक पहुँचा देती हैं। समुद्र में उठती लहरों के थपेड़े और उन्हें झेलते कश्ती सवार लोगों का डर – इस हिस्से का चित्रांकन फिल्म में काफी वास्तविक बन पड़ा है।

पर उनका सफर यहीं खत्म नहीं होता! कभी ट्रक, कभी पैदल तो कभी बस में सफर करते हुए

वे जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुँचती हैं। वहाँ उन्हें शरणार्थियों के एक कैम्प में रखा जाता है।

इसके बाद फिल्म यूसरा के संघर्ष और अन्ततः उसकी उपलब्धि की कहानी कहती है। यूसरा ओलिम्पिक्स के लिए फिर से अपने को तैयार करने लगती है। उसका लक्ष्य तय है, मन पक्का है। तैराकी पर उसका फोकस ठीक एकलव्य जैसा है – कुछ हो जाए, कुछ खो जाए, बस सीखना है।

खेल से जुड़ी कई अन्य फिल्मों की तरह यह भी असल ज़िन्दगी से प्रेरित है। फिल्म शरणार्थियों के संघर्ष को भी खूबसूरती से फ्रेम करती है।

## सिर्फ यूसरा की कहानी क्यों?

मैंने यह फिल्म चार बार देखी, इसके बारे में तुम्हें लिखकर जो बताना था। पर फिल्म के बारे में सोचते-लिखते समय बार-बार ऐसा लग रहा था जैसे कुछ छूट रहा है, कुछ खो गया है। धीरे-धीरे समझ आया कि पूरी कहानी तो कही ही नहीं फिल्म ने। बस एक किरदार चुन लिया, जो खेल में ऊँचा उठना चाहता है। उसका जाना-पहचाना संघर्ष चुन लिया। ऐसे किरदार फिल्मों में जाने-पहचाने हैं ना, स्टरियोटिपिकल। ऐसी और



कहानियाँ, फ़िल्में याद हैं तुम्हें? सोचो, कहानी यूसरा से अलग सारा की भी तो हो सकती थी। सारा फ़िल्म में मौजूद है भी, और नहीं भी। क्योंकि वह मुख्य किरदार नहीं बनती। सारा के बारे में तो कुछ बातें फ़िल्म खत्म होने के बाद लिखित रूप में पता चलती हैं।

सारा ने जर्मनी जाने की योजना बनाई, नासिर को साथ जाने के लिए तैयार किया, अपने पिता को मनाया, यूसरा को भी मनाया। रास्ते में उसने अन्य लोगों से दोस्ती की। समुद्र के ठण्डे पानी में पहले सारा कूदी ताकि कश्ती का भार हल्का हो। फ़िल्म में हमें इस सब की झलक मिली। लेकिन सारा की कहानी कई मोड़ लिए हुए हैं, इससे कहीं ज़्यादा पेचीदा है।

यूसरा की तरह ही सारा को भी तैराकी से प्यार था। पर उनके पिता का ज़्यादा रुझान यूसरा की ओर था, सारा को वह जैसे असमर्थ मान चुके थे। दुनिया की सभी बहनों के बीच काफी प्यार, थोड़ी लड़ाई, थोड़ी जलन रहती है। इन दोनों के बीच भी है। पर अलग-अलग जगहों के इन संघर्षों में सारा दर्द महसूस करने लगी। भावनात्मक दर्द। कड़वे अनुभव और मानसिक आघात यूँ ही नहीं चले जाते। समय बदलने के बाद भी उनका

अवसाद, उदासी मन में घर बनाए रहती है। इससे उभरना मुश्किल होता है। लेकिन पेशेवरों की मदद से, प्यार से, स्नेह से लोग शायद बाहर निकल पाते हैं। सारा को यह पेशेवर मदद मिली कि नहीं, फ़िल्म हमें नहीं बताती।

इस सब के रहते सारा के कन्धे में दर्द रहने लगा। उसे तैराकी छोड़नी पड़ी। सारा ने तय किया कि वह वापिस ग्रीस के उसी समुद्री किनारे पर जाएगी और आने वाले शरणार्थियों को पानी, जूते, खाना और स्नेह देगी। और उसने ऐसा ही किया। लेकिन 2018 में उसे जेल में डाल दिया गया, इस शक की बिनाह पर कि वह एक जासूस है। उस पर आरोप लगा कि वह इन्सानों की तस्करी करने में शामिल है। शरणार्थियों की मदद को एक अलग ही तरीके से देखा गया, उनकी मदद करने वाले गुनहगार हो गए। आज सारा पर ऐसे मुकदमे हैं, जिन्हें वह हार जाए तो उसे 25 साल की जेल हो सकती है।

अब थोड़ा सोचकर बताओ तुम्हारी नज़र में हीरो कौन है, यूसरा या सारा? फ़िल्म की कहानी किसके बारे में होनी चाहिए, यूसरा या सारा? तुम किससे मिलना चाहोगे, यूसरा या सारा?





## हाथी के गोबर में प्लास्टिक



रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

# क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का  
हमारा सवाल था—  
मध्य और उत्तर भारत के मैदानी  
इलाकों में गर्मियों में पतझड़ होता है।  
पहाड़ी इलाकों में ठण्ड के मौसम में।  
ऐसा क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचर्ष जवाब भेजे  
हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते  
हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें  
अपने जवाब लिख भेजना।

अगले अंक के लिए सवाल है—  
तुम्हारे हिसाब से तुम्हें  
मिली सबसे बुरी सज्जा  
कौन-सी थी, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/  
कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।  
जवाब तुम हमें  
[merapanna.chakmak@eklavya.in](mailto:merapanna.chakmak@eklavya.in)  
पर ईमेल कर सकते हो या फिर  
9753011077 पर व्हॉट्सएप भी कर  
सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते  
हो। हमारा पता है:

## चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज  
परिसर, जाटखेड़ी,  
फॉर्चून कस्टरी के पास,  
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

वैसे तो मैंने ये नहीं देखा है, लेकिन मैं यह सोच सकता हूँ कि ठण्ड में पतझड़ तभी होगा जब ठण्ड ज्यादा पड़ेगी। लेकिन अगर ठण्ड ज्यादा नहीं हुई तो पतझड़ नहीं होगा।

जयन्त राठौर, आठवीं, देवास, मध्य प्रदेश

पहाड़ी इलाकों में पतझड़ का कारण वहाँ पर ठण्ड का बढ़ना है। ठण्ड बढ़ने के कारण वहाँ की पत्तियों पर बर्फ जम जाती है। और बर्फ पिघलने के साथ पेड़ों की पत्तियाँ भी ढूटने लगती हैं। यही पतझड़ कहलाता है।

रंजीत, सत्रह साल, लर्निंग बाए लोकल्स, दिल्ली



चित्र: शिवानी कुमारी, छठवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार



चित्र: आदित्य, तेरह साल, मंजिल संस्था, दिल्ली

कश्मीर में ठण्ड की वजह से हवा चलने से पत्तियाँ गिरने लगती हैं। और रेगिस्तान में गर्म हवा चलने की वजह से पत्तियाँ गिरने लगती हैं।

कोमल चौहान, सातवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, इटावा, देवास, मध्य प्रदेश

गर्मी के दिनों में मध्य भारत में ज्यादा गर्मी पड़ने से पेड़-पौधे सूख जाते हैं। जैसे राजस्थान में बहुत ज्यादा गर्मी के कारण पेड़-पौधे सूख गए हैं, क्योंकि वहाँ पूरा रेत से भरा मैदान है। वैसे ही कश्मीर में इतनी ठण्ड है कि वहाँ पर ज्यादा ठण्ड के कारण पेड़-पौधे मुरझा/सूख जाते हैं।

पायल चौहान, दसवीं, देवास, मध्य प्रदेश

पहाड़ी इलाकों में मौसम हमेशा ठण्डा रहता है। पत्तों में ज्यादा नमी के कारण पत्ते सिकुड़ जाते हैं और जब बर्फ गिरती है तो सीधे पत्तों पर गिरती है। इस वजह से पत्ते गिर जाते हैं।

ज्योति, सत्रह साल, लर्निंग बाए लोकल्स, दिल्ली

जिस प्रकार मध्य और उत्तर भारत में गर्मियों में पतझड़ वहाँ के मौसम की वजह से होता है। ठीक उसी प्रकार पहाड़ी इलाकों में वहाँ के मौसम की वजह से ठण्ड में पतझड़ होता है। क्योंकि हर जगह का मौसम अलग होता है और वहाँ की हवा के तापमान की वजह से ऐसा होता होगा।

प्रियांशु, चौदह साल, लर्निंग बाए लोकल्स, दिल्ली

मैदानी इलाकों में गर्मी ज्यादा पड़ती है इसलिए वहाँ गर्मी में पत्ते गिरते हैं। और पहाड़ी इलाकों में ठण्ड ज्यादा होती है इसलिए वहाँ ठण्ड में पतझड़ होता है।

पवन ढाल, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, इटावा, देवास, मध्य प्रदेश

हेकड़ी के साथ मिस्टर दत्त ने टेढ़े मुँह से कहा, “क्या हुआ समझ नहीं पाए जनाब? अमल को बाघ ने मार डाला। ओ हो हो! उसकी पत्नी और बाल-बच्चों को मैं अपनी शक्ति कैसे दिखा पाऊँगा?”

अब तक यही अन्दाज़ा लगाया था। कर्नल उनके कन्धे से हाथ हटाकर उठ खड़े हुए। फिर कहा, “सर्वनाश! मिस्टर सेन को आदमखोर बाघ ने मार डाला! पर यह सब हुआ कैसे मिस्टर दत्त? आप दोनों क्या एक ही मचान पर थे?”

दत्त साहब रुमाल से आँख-नाक पोंछकर बोले, “एक ही मचान पर थे। पर वह बाघ कब चुपके-से पेड़ पर चढ़ आया, पता ही नहीं चला। मुझे

हल्की नींद-सी लग गई थी। अचानक अमल की चीख से मेरी आँख खुली। टॉर्च जलाते ही देखा, उफ! भयानक दृश्य था। बाघ अमल की गर्दन मुँह में दबोचकर कूद गया।”

कर्नल ने कहा, “आपने ज़रूर गोली नहीं चलाई? उसकी राइफल भी तो साथ लाए हैं।”

दत्त साहब लम्बी साँस लेकर बोले, “मैं सदमे में था। तभी टॉर्च और राइफल नीचे गिर गए थे। उफ! ओ हो हो हो! अमल!”

“फिर? फिर क्या हुआ?” मैंने घुटती साँस के साथ पूछा।



मिस्टर दत्त ने कहा, “फिर मैं कैसे भागकर आया हूँ वो बस मैं ही जानता हूँ। यह देखिए कितनी जगह खरोंचें लगी हैं। और यह देखिए, कितना खून। अमल का खून। ओ हो हो हो!”

कर्नल थोड़ा सोचकर बोले, “बहुत देर हो चुकी है। अब तक बाघ अपना शिकार लेकर चला गया होगा। सुबह तक इन्तजार करने के अलावा कोई उपाय नहीं है...”



बाकी रात और लोग सो नहीं पाए। बगल के कमरे से दत्त साहब के शोक प्रकट करने की फुसफुसाहट लगातार सुनाई दे रही थी। कर्नल और मैं फायरप्लेस के सामने बैठे रहे। बूढ़ा कर्नल एकदम चुपचाप था। कई सवाल पूछने पर भी कोई जवाब नहीं मिला। आदतन दाढ़ी या गंजे सिर पर हाथ फेरता, कभी आँखें मूँदकर छाती पर क्रॉस बनाता।

जंगल और पहाड़ को घना कुहासा धेरे हुए था। धूप बढ़ने पर कुहासा कम हो गया। तब कर्नल मुझे साथ लेकर निकले। दत्त साहब को देखा। वे धूप में लॉन में बैठे हुए थे। हाथ में राइफल थी। हिंसक शक्ल। लाल आँखें। कर्नल ने बुलाया, “आइए मिस्टर दत्त। देखें, आपके साथी की लाश मिलती है या नहीं।”

दत्त साहब उठे। “उस शैतान को खत्म किए बिना मैं कलकत्ता लौटने वाला नहीं। यही मेरी प्रतिज्ञा है।”

कर्नल ने चलते हुए कहा, “हमें सबसे पहले मचान की ओर ही चलना चाहिए।”

मिस्टर दत्त ने सिर्फ “हूँ” कहा।

बंगले से झाड़ियों भरी ढलान से उत्तरकर हम लोग एक छोटी-सी नदी के तट पर पहुँचे। वह नदी थोड़ी ही दूरी पर झरने से बहकर आती है। पत्थर के ऊपर से साफ पानी का बहाव आ रहा था। थोड़ी देर उसके किनारे-किनारे चलने के बाद मिस्टर दत्त ने कहा, “वो रहा, वहाँ।”

चारों तरफ घने पेड़-पौधे थे। बीच में थोड़ी-सी खाली घास वाली जमीन थी। एक भैंस का बछड़ा आराम से घास खा रहा था। मैंने सोचा, यही चारा होगा। उस जगह पर पहुँचकर हम दंग रह गए। मचान के ठीक नीचे एक कटी-फटी लाश पड़ी थी। फिर मिस्टर दत्त ज़ोर-से चिल्लाए और दौड़कर लाश के पास घुटनों के बल बैठ गए और रात की तरह ज़ोरों-से रोने लगे।

कर्नल और मैं आगे बढ़े। मिस्टर सेन के गले पर गहरी चोट के निशान थे और छाती का ऊपरी हिस्सा नुकीले नाखून की चोट से बुरी तरह ज़ख्मी था। पूरा पुलओवर फटा हुआ था। हर जगह जमे हुए काले खून के निशान थे। कर्नल ने सिर उठाकर ऊपर मचान की तरफ देखा। फिर अचानक पेड़ पर चढ़ने लगे। पेड़ के तने और टहनियों पर खून के निशान दिख रहे थे।

थोड़ी देर बाद कर्नल ने मचान से उतरकर कहा, “आपने सही कहा मिस्टर दत्त। बाघ ने अचानक मचान के ऊपर ही उन पर हमला किया। उन्हें बचाव का वक्त नहीं मिला। तो ये लाश... ”

दत्त साहब ने शान्त होकर कहा, “चौकीदार को कुछ लोगों को साथ लाने को कह दिया है। जीप में कलकत्ता ले जाऊँगा। पर पता नहीं अमल की पत्नी के सामने कैसे खड़ा हो पाऊँगा। उफ!”

कर्नल थोड़ी देर कुछ सोचते हुए मचान की तरफ ताकते रहे। फिर अचानक मुड़कर बोले, “देखिए मिस्टर दत्त, मुझे लगता है कि आपके साथी मिस्टर सेन को जिस बाघ ने मार डाला, वह आदमखोर नहीं था।”

मिस्टर दत्त ने भौंहें चढ़ाकर कहा, “आप क्या शिकारी हैं? कैसे पता कि वह आदमखोर बाघ नहीं था? आदमखोर बाघ के अलावा कोई बाघ इस तरह चुपके-से पेढ़ पर चढ़कर शिकारी पर हमला नहीं करता।”

कर्नल ने कहा, “बिलकुल ठीक। लेकिन इस जंगल में और बाघ भी तो हो सकते हैं।”

दत्त साहब ने भड़ककर कहा, “जिस बात की जानकारी न हो, उस पर ज़्यादा बकवास मत कीजिए।”



कर्नल डॉट खाए सहमा हुआ चेहरा लेकर वहाँ से हट गए। “चलो जयन्त, लाश तो मिल गई। अब हम अपने काम पर लग जाते हैं।”

झरने के किनारे आकर मैंने कहा, “कितना बदतमीज़ आदमी है! ज़िद्दी। एकदम बकवास!”

कर्नल ने हँसकर कहा, “शिकारियों को थोड़ा गुस्सा आना स्वाभाविक है। जाने दो जयन्त। तुम बंगले में लौटकर विश्राम करो। जानता हूँ इस बुझदे के पीछे भाग-दौड़ करना तुम्हें पसन्द नहीं।”

“हाँ, सो तो है। पर आप कहाँ जा रहे हैं?”

“फिलहाल कैमरा ले आता हूँ।” कहकर कर्नल तेजी-से आगे बढ़ गए। मैं बंगले में लौट आया।

कर्नल दोपहर तक लौटे। फिर खा-पीकर फिल्म डेवलप करने बाथरूम में चले गए। वही उनका डार्करूम था। पिछली रात नींद पूरी नहीं हुई थी। इसलिए मैं कम्बल ओढ़कर सो गया। अचानक कर्नल के पुकारने से नींद टूटी। “जयन्त! जयन्त! सब सामान जल्दी समेट लो। हम लोग अभी रवाना होंगे। जीप आ गई है।”

मैंने कहा, “ये क्या! जंगल की प्यास इतनी जल्दी मिट गई? या फिर आदमखोर बाघ के डर से? और जीप कहाँ से मिली? हम लोग ऐसे गलत वक्त में किस जहनुम में जाएँगे?”

धुरन्धर बूढ़े ने रहस्यमयी हँसी हँसते हुए कहा, “वेट, वेट डार्लिंग। फिलहाल सारे सवालों के जवाब में मेरी रात की उपज तुम्हें भेंट देना चाहता हूँ। ये लो।”

हाथ बढ़ाने पर जो मिला, वो एक छोटा-सा फोटोग्राफ था। किन्तु देखते ही मैं चौंक उठा। ये क्या देखता हूँ कि मिस्टर दत्त घुटने मोड़कर पत्थर की दरार में हाथ डालकर कुछ कर रहे हैं। मैंने हैरान होकर कहा, “इसका मतलब? कल रात तो वो दोनों, मतलब मिस्टर दत्त और मिस्टर सेन मचान पर थे! लेकिन यहाँ तो दिख रहा है कि मिस्टर दत्त अकेले कुछ कर रहे हैं।”

कर्नल फिर से अजीब ढंग से हँसे। “जल्दी से तैयार हो जाओ। तुम्हें जो दिखाने का वादा किया था, सो दिखा दिया। बाकी प्रतापगढ़ टाउनशिप में जाकर दिखाऊँगा।”

“पर आपने तो आदमखोर बाघ दिखाने का वादा किया था!”

“वही तो दिखाया।” कहकर बूढ़े जासूस साहब खुद ही मेरा कम्बल-बेड़िंग समेटने लगे। मैं हक्का-बक्का रह गया। थोड़ी देर बाद जीप में चढ़ते वक्त कर्नल ने कहा, “दरअसल जिस बूढ़े और दुबले बाघ ने इस इलाके में पाँच लोगों को मारकर खाया था, वो अपनी पहाड़ी गुफा में स्वाभाविक मौत से मरा पड़ा है। कल उसे खोज आया हूँ। ऐसे भी कभी किसी शिकारी की गोली खाने की वजह से बाघ की हालत शोचनीय हो चुकी थी। अच्छा चलो, अब जीप पर चढ़ जाओ, यथास्थान पहुँचकर सब समझ जाओगो।”

प्रतापगढ़ टाउनशिप पहुँचने में तकरीबन शाम हो गई। हैरान होकर देखता हूँ कि जीप थाने में घुस रही है। जी घबराने लगा। तो क्या मिस्टर सेन बाघ के हाथों नहीं मरे? मामूली कत्तल का मामला है?

हूँ, ठीक वही मसला निकला। मिस्टर दत्त लाल आँखें लिए हिंसक शक्ल बनाए बैठे हुए थे। हाथों में हथकड़ी थी। टेबल को चारों ओर से घेरे हुए पुलिस के कुछ अफसर थे। हमें देखकर एक पुलिस अफसर चिल्ला उठा, “हैलो कर्नल!”

कर्नल ने अपने कोट के पॉकेट से तस्वीरों का एक गुच्छा आगे बढ़ाकर कहा, “यह मेरे अद्भुत कैमरे की रात की फसल है मिस्टर शर्मा। एक तस्वीर में मिस्टर दत्त बाघ के दो नाखून छिपाते हुए दिखाई देंगे। फिल्म पर समय भी सांकेतिक रूप में छप जाता है। रात के दो बजकर तीस मिनट। यह देखिए।”

मिस्टर शर्मा ने हँसकर कहा, “आपके निर्देशानुसार सही जगह से कत्तल के लिए इस्तेमाल किए गए दो हथियार बरामद किए गए हैं। लाश मुर्दाघर में भेजी जा चुकी है। रिपोर्ट बस आती ही होगी।” कहकर उन्होंने दराज से कागज में मुड़े बाघ के पंजे के दो नाखून जैसे खतरनाक अस्त्र निकाले। उन पर खून के निशान काले पड़ गए थे।

मिस्टर दत्त चट्टान की तरह सिर झुकाकर बैठे थे।

देर रात को सर्किट हाउस के एक कमरे में कर्नल से आमना-सामना हुआ। पूछा, “आखिर दत्त साहब ने अपने दोस्त का कत्तल क्यों किया?”

कर्नल ने जवाब दिया, “कलकत्ता की मशहूर होजरी दत्त एंड सेन का नाम नहीं सुना जयन्त? अरे! वही बाघ-मार्का बनियान आदि वाले। जितना समझ में आया है, उससे लगता है कि दत्त साहब भीतर ही भीतर अपने पार्टनर मित्र सेन साहब को धोखा देकर अकेले मालिक बनने का षड़यंत्र रच रहे थे। पिछली रात मैंने उन्हें दबी आवाज में कुछ बहस करते हुए सुन लिया था। खैर, उस षड़यंत्र का ही नतीजा था यह हत्याकाण्ड। जरा सोच के देखो जयन्त, मिस्टर दत्त ने क्या कमाल की तरकीब निकाली थी! आदमखोर बाघ का शिकार करने के सिलसिले में किसी आदमी का मारा जाना कितना स्वाभाविक लगता। सिर्फ इस बूढ़े प्रकृति-प्रेमी और इसके अद्भुत कैमरे ने इसमें विघ्न डाल दिया। पर डार्लिंग जयन्त, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगर तुम इस बूढ़े को बेरहमी से छोड़ न जाओ, तो मैं तुम्हें कुछ ही दिनों में सचमुच का बाघ ज़रूर दिखाऊँगा।”

दाढ़ी वाले गंजे ‘धुरन्धर बूढ़े’ कर्नल नीलाद्रि सरकार ने एक सिद्ध पादरी की तरह अपने चौड़े सीने पर एक क्रॉस बनाया। फिर अस्पष्ट आवाज में कहा, “आमीन! आमीन!”





कविता डायरी-५

# जंगल के बीच में ट्रेन खड़ी थी...

सुशील शुक्ल

चित्र: तापोशी धोषाल

रात का वक्त था। ट्रेन जंगल के बीच में खड़ी थी। इन दो वाक्यों को पढ़कर लगता है कि आगे कुछ घटने वाला है। इन दो वाक्यों में एक कहानी की सम्भावना भरी है। ‘फिर क्या हुआ’ का उतावलापन है। इन वाक्यों को ज़रा-सा उलट-पुलट दें तो रोमांच और बढ़ जाएगा। मसलन, बीच जंगल में ट्रेन रुक गई थी। क्यों रुक गई थी? ट्रेन बहुत बड़ी है। हम उसका एक छोटा-सा हिस्सा ही देख सकते हैं। ट्रेन में बैठे हुए हमें इतना ही पता चलता है कि ट्रेन रुक गई है। ‘ट्रेन रुक गई है’ में यह अन्देशा भी शामिल है कि उसे किसी ने रोक लिया है। मैंने एक बार किया और कान पकड़े कि अब कभी नहीं करूँगा। ट्रेन की पटरी पर कान सटाकर देखा कि क्या ट्रेन आने की थरथरी, कम्पन उसमें है। इन दो वाक्यों पर कान सटाकर देखेंगे तो कहानी की एक थरथराहट सुनाई देगी।

लेकिन इसी एक दृश्य से एक कवि ने एक कविता की थरथराहट सुनी।

जंगल के बीच में ट्रेन खड़ी थी  
ट्रेन के बाहर रात परी थी  
मैंने उठकर बत्ती बुझा दी  
ट्रेन में छप से रात आ गई

‘खड़ी थी’ में एक इत्मीनान है। कि चल पड़ेगी। पहली बार पड़ी तो पढ़ा — जंगल के बीच में ट्रेन खड़ी थी। ट्रेन के बाहर रात पड़ी थी। फिर मैंने गौर किया कि नहीं ‘पड़ी थी’ तो छन्द के अनुमान से आया। भाषा में अनुमान हनुमान है। उसे अपनी ही ताकत का पता नहीं है। फिर पाया कि ‘पड़ी’ नहीं ‘परी’ है। मैं सोचता रहा कि छन्द ने कवि की ओर यह शब्द ‘पड़ी’ धकेला होगा। रात परी चुना शब्द है। कवि मनोज कुमार झा मैथिली भाषी हैं। कभी-कभी वे ‘ड़’ को ‘र’ की तरह उच्चारते हैं। क्या पता रौ में ‘पड़ी’ ‘परी’ हो गया हो। खैर।

मैंने उठकर बत्ती जला दी। ‘मैंने’ का मतलब कवि ही हो यह ज़रूरी नहीं। यानी कवि के साथ ऐसा घटा हो यह ज़रूरी नहीं। भाषा हमें यह ताकत बख्शती है वरना हम झूठ कैसे बोल पाते? मुझे ‘छप’ शब्द अच्छा लगा। इसमें एक झटपन है। ‘चकमक छप गई है’ वाला छप नहीं है यह। इसमें प आधा है। इसने भी झट का भाव पैदा करने में थोड़ा हाथ बँटाया है। ट्रेन तो रात में ही चल रही थी। उसके भीतर भी रात के उतने ही बज रहे होंगे जितने उसके बाहर। मगर रात तो बाहर थी। जो ट्रेन में उजाले के उत्तरते ही चढ़ गई।

कवि प्रभात की एक कविता इस सिलसिले में याद आने को तैयार खड़ी है।

धीरे धीरे रात अँधेरी  
हो गई गहरी काली  
शहर की सारी सड़कें हो गई  
धीरे धीरे खाली

इस कविता से आती यह आहट कितनी मीठी है कि रात धीरे-धीरे गहरा रही है। काली हो रही है। और सड़कें खाली हो रही हैं। उजाले से। चलने के उजाले से। लोगों के चलने के उजाले से। दोनों कविताओं में अँधेरा कितना अलग दिखता है। दोनों ही जगह उजाला जा रहा है। एक कविता एक क्षण की कविता है। एक कविता शाम से लेकर रात के फैलकर फूल जाने की कविता है।



कभी गौ  
खतम होने वाली  
अभाव्य संख्याएँ

भाग 2

आलोक कान्हेरे  
अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री

तूने पिछले महीने की  
चकमक में अभाव्य  
संख्याओं वाला  
लेख पढ़ा?

हाँ, पढ़ा। मुझे मिताली राज  
को खेलते देखना बहुत अच्छा  
लगता था। जब उसने क्रिकेट  
से संज्ञास लिया तो मैं बहुत  
दुखी हुआ था।



मैं जानना चाहता था कि  
उसने अपनी जर्सी के  
लिए '3' नम्बर  
क्यों चुना।

तुझे पता है को लगभग  
20 सालों तक  
भारतीय क्रिकेट टीम की  
कप्तान रही हैं?

सिर्फ मिताली राज ही नहीं,  
ऐसा लगता है कि कई सारी  
मशहूर खेल हस्तियों ने  
अपनी जर्सी के लिए  
अभाव्य संख्याएँ चुनी हैं।

वैसे, अभाव्य संख्याओं से  
जुड़ी सिकाड़ा के  
जीवन-चक्र की कहानी भी  
बड़ी मळेदार थी। जही?

हाँ, पहले मैं अक्सर अभाव्य संख्याओं की  
परिभाषा भूल जाता था। लेकिन ये सारी  
कहानियाँ पढ़ने के बाद लगता है कि अब  
मुझे हमेशा याद रहेगा कि अभाव्य  
संख्याएँ वे होती हैं जो केवल 1 और  
अपने पहाड़े में आती हैं।



अच्छा, ये बता कि तूने चकमक के लेख में दी 100 तक की अभाव्य संख्याओं की तालिका को पूरा भरा या नहीं?

मुझे 100 तक की संख्याओं में ये अभाव्य संख्याएँ मिलीं:

2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23,  
29, 31, 37, 41, 43, 47, 53, 59,  
61, 67, 71, 73, 79, 83, 89, 97.

तूने गौर किया कि 2 एकमात्र सम संख्या है जो अभाव्य है।

हाँ, क्योंकि अन्य सभी सम संख्याएँ पक्के ताँर पर 1 से, खुद से और 2 से विभाजित होती हैं। इसलिए कोई बड़ी सम संख्या भी कभी अभाव्य नहीं होती है।

एकदम सही। तो यदि हमें अभाव्य संख्याएँ खोजनी हैं तो हमें केवल विषम संख्याओं को देखना है। लेकिन कई सारी विषम संख्याएँ अभाव्य संख्याएँ नहीं होतीं, जैसे कि 9 और 15।

(2), 3, 5, ..... 83, 89, 97.

हाँ, ये तो हैं। पर एक बात समझ नहीं आई कि लेखक ने इन्हें 'कभी ना खत्म होने वाली अभाव्य संख्याएँ' क्यों कहा। क्या ये सच में कभी खत्म नहीं होतीं?

ये मैं भी सोच रही थी। लगता है कि अन्य संख्याओं की तरह अभाव्य संख्याएँ भी कभी खत्म नहीं होतीं।

तुझे पता चला क्यों?

शायद। पर पहले ये बता कि प्राकृत संख्याएँ (Natural numbers) जैसे कि 1, 2, 3,... कभी खत्म क्यों नहीं होतीं?

हम्म। चल मान ले कि प्राकृत संख्याएँ खत्म होती हैं। अब यदि तू कहे कि N अन्तिम प्राकृत संख्या है, तो मैं N में 1 जोड़ूँगा और मुझे N + 1 मिलेगा। और N + 1 एक प्राकृत संख्या होगी। इसलिए प्राकृत संख्याएँ कभी खत्म नहीं हो सकतीं।

वाह! क्या तर्क दिया है तूने! अभाव्य संख्याओं के मामले में भी ऐसा ही है।





बहुत बढ़िया। अब यदि मैं 2, 3 व 5 को गुणा करूँ और गुणनफल में 1 जोड़ूँ तो?

तो उत्तर 31 होगा। और 2, 3 वा 5 से भाग देने पर शेषफल 1 होगा।

सही।

पर इस सबका अभाव्य संख्याओं के खतम ना होने से क्या लेना-देना?

एक तरकीब है। यदि तू मुझसे कहे कि P अन्तिम अभाव्य संख्या है, तो मैं 2 से P तक की सारी अभाव्य संख्याओं को गुणा करूँगी। और फिर गुणनफल में 1 जोड़ दूँगी, जैसे कि हमने पहले किया था।

मान ले कि ऐसा करने से मिली संख्या Q है। अब 2 से P तक की किसी भी अभाव्य संख्या से भाग देने पर शेषफल 1 आएगा, जैसे कि 31 को 2, 3 व 5 से भाग देने पर आया था।

फिर से सही!

यानी कि यह संख्या Q एराटोस्थनीज़ की छलनी में से नहीं छनेगी। यह एक अभाव्य संख्या है।

बिलकुल सही।

यह तो काफी दिलचस्प है।

मैंने पहली दो अभाव्य संख्याओं के लिए इसे जाँचकर देखा है। यानी कि मैंने 2 व 3 को गुणा किया तो 6 मिला। फिर 6 में 1 जोड़ा तो मिला 7, जो कि एक अभाव्य संख्या है।

$$2 \times 3 + 1 = 7$$

$$2 \times 3 \times 5 + 1 = 31$$

मैं शुरुआती तीन अभाव्य संख्याओं के लिए इसे जाँचकर देखता हूँ। यानी कि मैं 2, 3 और 5 को गुणा करता हूँ और फिर गुणनफल में 1 जोड़ता हूँ तो 31 मिलता है। और 31 भी एक अभाव्य संख्या है।

$$2 \times 3 \times 5 \times 7 + 1 = 211$$



मैंने उन संख्याओं को गुणा तो किया, पर  
फिर मुझे अपनी मैम की मदद लेनी पड़ी।

मैंने भी अपनी मम्मी से मदद के लिए कहा। 2, 3,  
5, 7 और 11 का गुणनफल हुआ 2310 और इसमें  
1 जोड़ा तो हुआ 2311। मेरी मम्मी ने चैक करके  
बताया कि 2311 भी एक अभाव्य संख्या है। तुझे  
पता है कि एक वेबसाइट है जिस पर हम यह चैक कर  
सकते हैं कि कोई संख्या अभाव्य है या नहीं।

<https://www.calculatorsoup.com/calculators/math/prime-number-calculator.php>

अरे वाह। अब अगर 2, 3, 5, 7, 11  
और 13 को गुणा करें तो... गुणनफल  
30030 होगा।

इसमें 1 जोड़ने पर 30031 मिलेगा।  
वेबसाइट में बताया है कि यह अभाव्य संख्या  
नहीं है। यह 59 से विभाजित होती है।

$$\begin{aligned} 2 \times 3 \times 5 \times 7 \times 11 \times 13 + 1 \\ = 30030 + 1 \\ = 30031 \end{aligned}$$

करके देखते हैं।

$$\begin{array}{r} 59 \sqrt{30031} \\ \underline{-295} \\ \hline 531 \\ \underline{-531} \\ \hline \end{array}$$

ये तो सही निकला। यानी कि ये ज़रूरी  
नहीं कि अगर सभी अभाव्य संख्याओं  
को गुणा करके गुणनफल में 1 जोड़ें  
तो अभाव्य संख्या मिलेगी। एक और  
मज़ेदार बात है। 7 के बाद की सभी  
अभाव्य संख्याओं को शामिल  
करते हुए यह प्रक्रिया अपनाने पर  
हमें जो भी संख्याएँ मिलती हैं वे  
सभी 1 पर खत्म होती हैं।

हाँ, मैंने भी यह नोटिस  
किया। तुझे क्या लगता  
है ऐसा क्यों है?

चल, अभाव्य संख्याओं के बारे में थोड़ा  
और पता करते हैं। यदि हमें कोई नई  
चीज़ पता चली तो हम उसे लिखकर  
चकमक को भेजेंगे।

अरे वाह! अपनी बात को मैंगलीन में छपा  
देखना कितना मज़ेदार होगा जा। नहीं?

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? परं ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुम्को नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो।

## सुडोकू 67

	9		7		8	3	1
6	1		3	9		8	7
3	7			1	4		2
	4		5			6	9
7	2	5	8	6	9		4
9						7	8
			1		7		5
	5	7		8			1
1	3				4		7



# पहेली

## चित्र

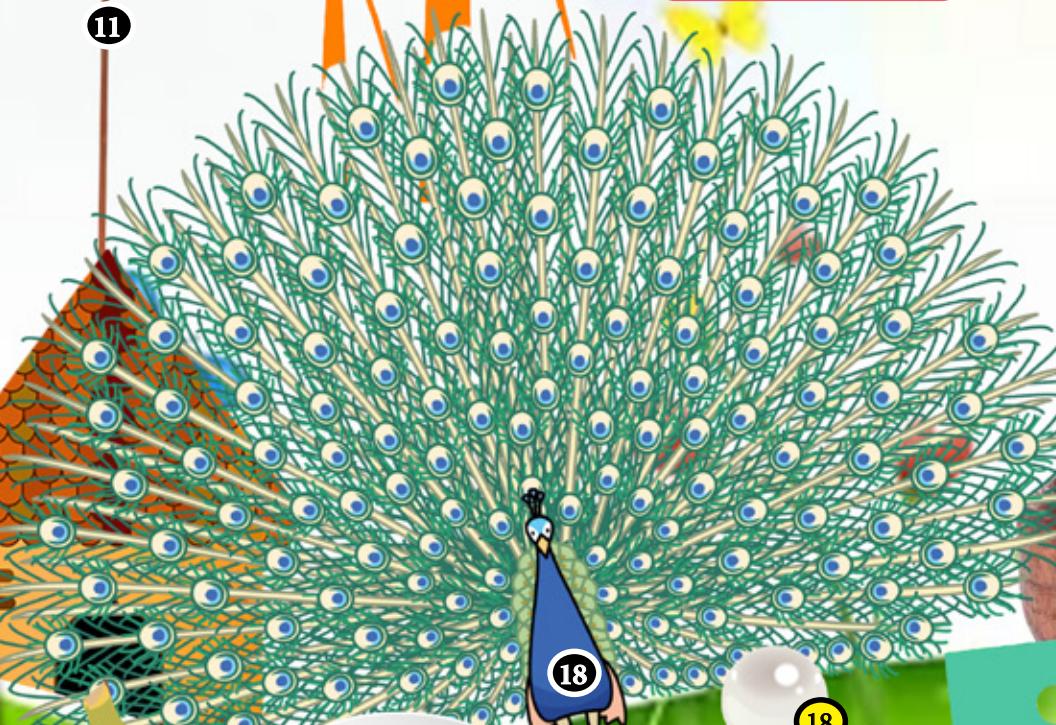
9

ऊपर से नीचे

24

बाएँ से दाएँ

11



11

18

1

18

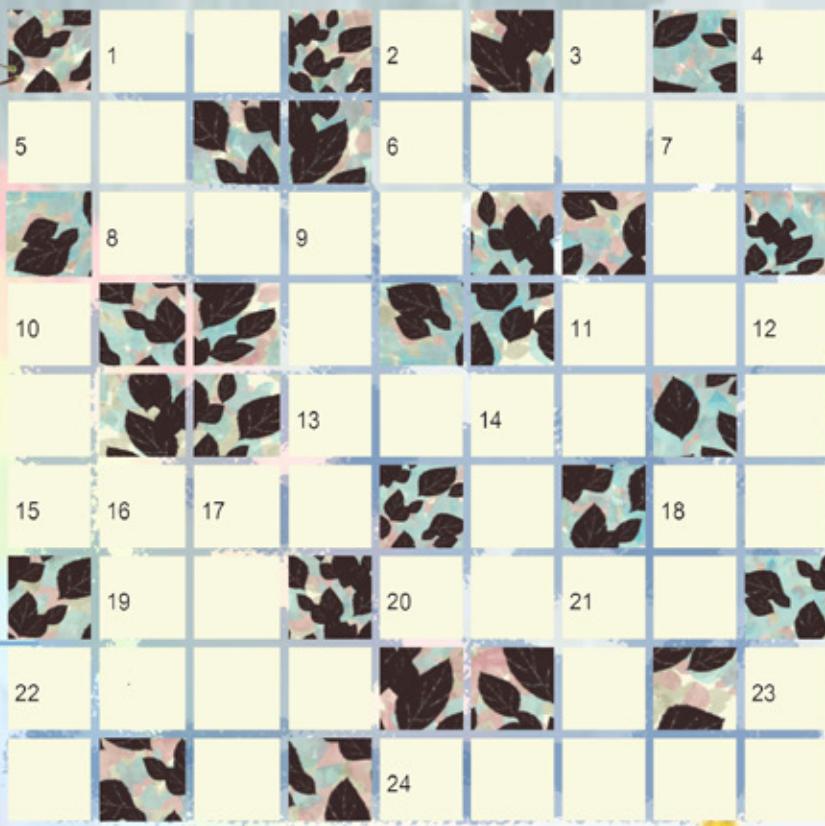
14

19



जवाब पेज 42 पर

चक्रमक 31  
जुलाई 2023



अमन की कुछ बातें

# मैसेज भेजना और बात करना

अमन मदान

चित्र: अस्मिता दिलीप

अब हम रोजाना ई-मेल और व्हॉट्सएप आदि का प्रयोग करते हैं। मगर ये बात करने के बहुत संकीर्ण माध्यम हैं। इनसे अक्सर बात अधूरी या गलत समझी जाती हैं। कुछ ऐसा ही रजिया और कैरन के साथ हुआ...



रजिया और कैरन को व्हॉट्सएप का नया-नया शौक चढ़ा था। उनके पास मोबाइल नहीं था। मगर वे अपने-अपने मम्मी-पापा के फोन से व्हॉट्सएप इस्तेमाल करती थीं। वे एक-दूसरे को हँसते हुए बच्चों के वीडियो, प्यारे-से पिल्लों की फोटो भेजती थीं। और मजेदार-मजेदार ईमोजी से अपनी भावनाओं को साझा करती थीं। रोज़ शाम को दोनों मोबाइल लेकर बैठ जातीं और एक के बाद एक मैसेज भेजती रहतीं।

रजिया का जन्मदिन आ रहा था। उसने कैरन को मैसेज भेजा – “मेरा जन्मदिन आ रहा है। तुम कल आना, हम उसकी तैयारी करेंगे।” मगर कैरन का कोई जवाब नहीं आया। रजिया बहुत देर तक इन्तजार करती रही। मगर फिर भी कुछ नहीं आया।

उसने सोचा, “शायद कैरन आना नहीं चाहती।”

फिर उसने सोचा, “शायद उसे लगता है कि मैं उससे बहुत ज्यादा काम कराऊँगी।”

थोड़ा और समय निकलने पर भी जब कोई जवाब नहीं आया तो उसने सोचा, “शायद वह मुझे बेवकूफ और खुदगर्ज समझती है।”

रजिया के मन पर उदासी छाने लगी। उसे थोड़ा गुस्सा भी आ रहा था। वह सोचने लगी, “ये कैरन अपने आप को क्या समझती है? मैं उसके बिना जन्मदिन नहीं मना सकती क्या?”



फिर उसने मोबाइल देखा तो कैरन का जवाब आया हुआ था – “नहीं” रजिया की आँखों में आँसू आ गए। जिसका उसे डर था, वही हुआ। कैरन आना ही नहीं चाहती थी। उसने जाकर मोबाइल अम्मी को दे दिया और चुपचाप बैठ गई।

अम्मी थोड़ी हैरान हुई। रोज़ तो मोबाइल रजिया से छीनना पड़ता था। और आज रजिया खुद ही दे रही है। “क्या बात है, कैरन से और मैसेज नहीं करने क्या?” अम्मी ने पूछा। रजिया ने बड़े उदास चेहरे से अम्मी को देखा और व्हॉट्सऐप पर अपना मैसेज और कैरन का जवाब पढ़ाया। “कैरन तो मेरी दोस्त ही नहीं है। उसे मेरे जन्मदिन से कोई मतलब नहीं”, उसने उदास स्वरों में बोला।

अम्मी को व्हॉट्सऐप और ई-मेल का बहुत तजुर्बा था। उन्होंने कहा, “अरे! ये व्हॉट्सऐप पर मत जाओ। यह तो बड़े-बड़े को भटका देता है। इस पर सिर्फ कुछ शब्द लिखे हुए आते हैं, उनके पीछे की भावनाएँ नहीं। जब हम आपस में बात करते हैं तो हमारे लहजे से ही पूरा मतलब साफ होता है। मगर इसमें लिखे हुए शब्दों में लहजा या चेहरे के भाव नहीं दिखते। इन शब्दों को हम कई तरह से समझ सकते हैं – गुस्से से, दुख से या फिर मज़ाक से। क्या पता कैरन ने यह क्यों लिखा। जब भी कोई संवेदनशील बात हो, तो फोन पर ही करो या फिर जाकर मिल

लो। व्हॉट्सऐप के इन छोटे-छोटे मैसेज के भरोसे कोई बड़ा मतलब नहीं निकालना चाहिए।”

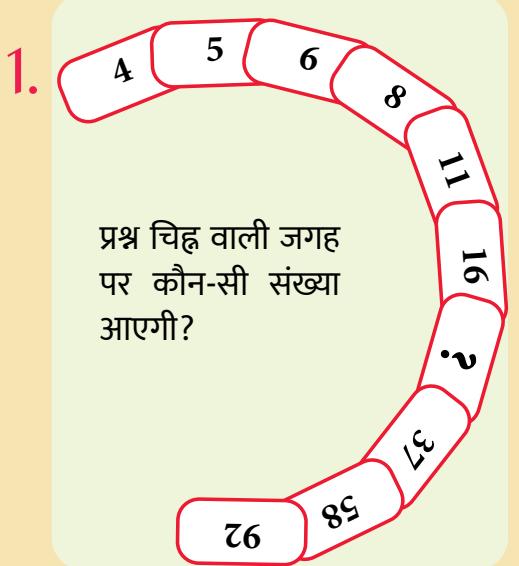
अम्मी ने उसी समय कैरन की माँ को फोन लगाया। “हैलो, कैसी हैं आप? और कैरन कैसी है?” उन्होंने पूछा। कैरन की मम्मी की आवाज थोड़ी हुई और चिन्तित थी, “वैसे तो सब ठीक है, मगर कैरन को सुबह से बुखार है। रोज़ कितने मज़े-से फोन से खेलती है, मगर आज तो उससे फोन को भी नहीं देखा जा रहा। बस रजिया को एक छोटा-सा मैसेज लिखकर सो गई।”

फोन रखकर रजिया और उसकी अम्मी स्कूटी पर बैठकर फौरन कैरन के घर पहुँच गए। उन्होंने कैरन के माथे पर पट्टियाँ लगाने में मदद की और उसे फलों का रस पिलाया। जब कैरन ने आँखें खोलकर रजिया को देखा तो सबसे पहले यही कहा, “सॉरी रजिया, मुझे थोड़ा बुखार है। मैं कल तुम्हारी मदद नहीं कर सकती। यह सोचकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा।” रजिया ने कहा, “तुम जल्दी-से ठीक हो जाओ। अभी तो मेरे जन्मदिन में समय है, हम बाद में उसकी तैयारी करेंगे। भला, अपनी सबसे अच्छी दोस्त के बिना मैं जन्मदिन की तैयारी कैसे कर सकती हूँ।”

घर लौटते हुए रजिया ने अम्मी से कहा, “मोबाइल के इन छोटे मैसेजों से पूरी बात तो समझ ही नहीं आती। उस एक शब्द का तो मैंने कुछ और ही मतलब निकाल लिया था। अब पता चला कि इसके कई मतलब निकल सकते हैं। आगे से जब भी कोई ऐसी बात होगी तो मैं फोन करूँगी या मिलकर ही बात करूँगी।”

अम्मी ने कहा, “अच्छा हुआ तुम्हें यह बात छोटी उम्र में ही समझ आ गई। अब रुककर आइसक्रीम खाएँ?” रजिया ने मुस्कराकर कहा “हाँ!”

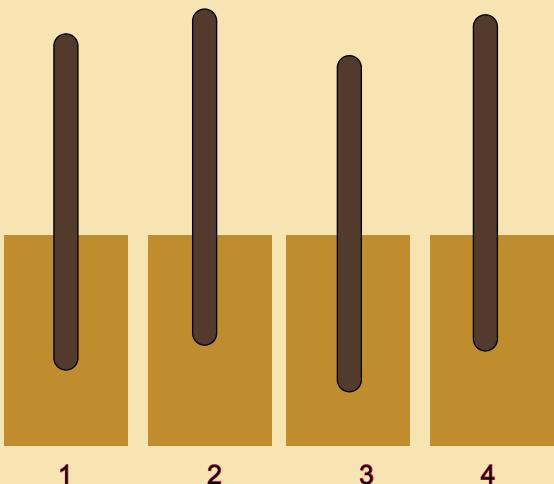




प्रश्न चिह्न वाली जगह  
पर कौन-सी संख्या  
आएगी?

**छह**  
दोस्त एक गोलाकार  
मेज़ के चारों ओर बैठे हैं। बेनी,  
डॉली और चार्ली के बीच में है।  
आर्या, एलीना और चार्ली के बीच में है।  
फाल्गुनी, डॉली के दाईं ओर है। तो  
बताओ कि आर्या और फाल्गुनी के  
बीच कौन बैठा है?

**5.** कौन-सी रॉड को ज़मीन से निकालना  
ज़्यादा मुश्किल होगा?



**2.** दी गई ग्रिड में कई शहरों के नाम छिपे हुए हैं।  
तुमने कितने ढूँढे?

लो	शे	ख	म	ट	सू	बा	भा	लू
म	ग	र	म	च्छ	अ	क	घ	अ
इ	ची	गो	रि	ल्ला	र	सि	डि	ज
गि	ता	श	गै	डा	भे	डि	या	ग
ल	च	म	गा	द	इ	के	ल	र
ह	साँ	के	छ	पां	में	ढ	क	घो
री	छि	प	क	ली	डा	हि	इ	ड़ा
ब	क	री	छु	बं	द	र	ब	हा
ला	तैं	दु	आ	भा	त	ण	म्बा	थी

**4.** दो संख्याओं को गुणा करने पर 24 उत्तर मिलता है  
और जोड़ने पर 10। कौन-सी संख्याएँ हैं वो?

**6.**

सारा, ज़ारा और लारा तीनों बहने हैं। उनकी उम्र 9, 10 व 11 साल है। नीचे कुछ क्लू दिए गए हैं, जिनके आधार पर तुम्हें बताना है कि किसकी उम्र क्या है। पर दिलचस्प बात ये है कि इनमें से सिर्फ एक क्लू सही है। बाकी सब गलत हैं।

- ज़ारा 10 साल की है।
- सारा सबसे छोटी है।
- सारा 11 साल की है।
- ज़ारा अपनी बहनों से 1 साल बड़ी व 1 साल छोटी है।
- ज़ारा सबसे छोटी नहीं है।
- सारा, ज़ारा से दो साल बड़ी नहीं है।
- ज़ारा सबसे बड़ी है।
- लारा, सारा से बड़ी है।



# बायां च

## फटाफट बताओ

क्या है जिसे लोग ढूबते हुए तो देखते हैं, पर उसे बचाने कोई नहीं जाता?

(चप्पा)

कौन-सी चीज़ है जो है तो ठण्डी, पर उससे भाप निकलती है?

(कम्फ़)

क्या है जो ऊपर-नीचे तो जाती है, पर फिर भी अपनी जगह पर ही रहती हैं?

(आँखीमि)

लालटेन पंखों में ले उड़े अँधेरी रात में जलती बाती बिना तेल के जाड़े व बरसात में

(झाप्च)

लकड़ी का है मेरा तन चलती हूँ पैरों के बिन सागर-झील की सैर कराऊँ बिन पुल नदिया पार कराऊँ

(छान)

7.

स्पोर्ट्स-डे के लिए स्कूल की बिल्डिंग को सजाना है। इसके लिए केवल 12 झण्डियाँ हैं। अयान ने चित्र में दिखाए तरीके से बाउंड्री की हर दीवार पर 4 झण्डे लगाए। इरा ने इन्हीं 12 झण्डियों को इस तरह लगाया कि हर दीवार पर 5 झण्डियाँ थीं। इरा ने ऐसा कैसे किया होगा?

8.

इस क्रम की अगली संख्या क्या होगी?

3, 12, 39, 120...



9. दी गई शिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग कुत्ते आने चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से कुत्ते आएँगे?

जवाब पेज 42 पर



चित्र: सुर्या, सात साल, स्टुडियो रानिंग स्ट्रिच, बैंगलूरु, कर्नाटका

# घर के रास्ते

दिव्या  
बारहवीं  
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय  
स्थानजी, मण्डी  
हिमाचल प्रदेश

हमारे घर के रास्तों की तो बात ही निराली है। कहीं कैसे हैं, तो कहीं कैसे हैं। इन रास्तों का पता ही नहीं चलता कि कहाँ से शुरू हैं और कहाँ से खत्म। रास्ते इतने खराब हैं कि बुजुर्ग तो इन रास्तों पर चल भी नहीं सकते। कहीं-कहीं रास्ते ठीक हैं, कहीं-कहीं धसक गए हैं। और हमारी पंचायत इन रास्तों के लिए कुछ भी नहीं करती।

बारिश के मौसम में हमारे घरों में पानी ही पानी भर जाता है, जिससे मिट्टी बहुत ही चिकनी हो जाती है। इससे गिरने का डर रहता है। घर के रास्ते ऊबड़-खाबड़ हैं। इससे हमें कहीं भी आने-जाने में बहुत समस्या होती है। अगर हम सब गाँववाले मिलकर रास्तों को पक्का करने की ठान लें तो हमारे घर के रास्ते पक्के व चलने लायक हो सकते हैं।



चित्र: राधिका रवीन्द्र कुमार, बाल भवन, वડोदरा, गुजरात

## वर्षा

तान्या पृथा  
पाँचवीं  
शिक्षान्तर स्कूल  
गुरुग्राम, हरयाणा

घुमड़-घुमड़कर बादल आए  
अपने साथ वर्षा लाए  
इतने खुश थे पौधे और फूल  
वर्षा इतनी ज्यादा कि बन्द हो गए स्कूल

आओ मिलकर बाहर जाएँ  
एक-दूसरे पर पानी उड़ाएँ  
कागज की एक नाव बनाएँ  
उसको पानी में तैराएँ

बिजली जोर-से चमक रही है  
छम-छम पानी बरस रहा है  
इन्द्रधनुषी सतरंगी आया  
मोरों ने अपना नाच दिखाया



चित्र: आरवी सक्सेना, यूकेजी, सेंट अल्फोंसा इंग्लिश मीडियम स्कूल, रातेसरा, चरामा, कांकेर, छत्तीसगढ़

# खाजा बाबा

लवकुश सोनकर  
पाँचवीं  
कम्पोजिट स्कूल, धुसाह  
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हमारे गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था। वो खाजा बेचता था। वह हम लोगों से बहुत प्यार करता था। उसका कोई बेटा नहीं था। एक बेटी थी पर वो बहुत लालची थी। उसने धोखे-से बूढ़े बाबा की सारी जायदाद अपने नाम लिखा ली थी। और उन्हें घर में भी नहीं रहने देती थी। इसलिए बूढ़े बाबा को काम करना पड़ता था।

वह जब भी गाँव में आते तो डमरु बजाते। इससे गाँव के बच्चे-बूढ़े उनके पास आ जाते। जिन बच्चों के पास पैसा नहीं होता था उन्हें भी बाबा खाजा खिला देते थे। एक बार बूढ़े बाबा लगभग हफ्ते भर नहीं आए। तब बच्चों ने मन बनाया कि बूढ़े बाबा से मिलने उनके घर जाएँगे। बाबा के घर जाने पर पता चला कि वे अब इस दुनिया में नहीं हैं।



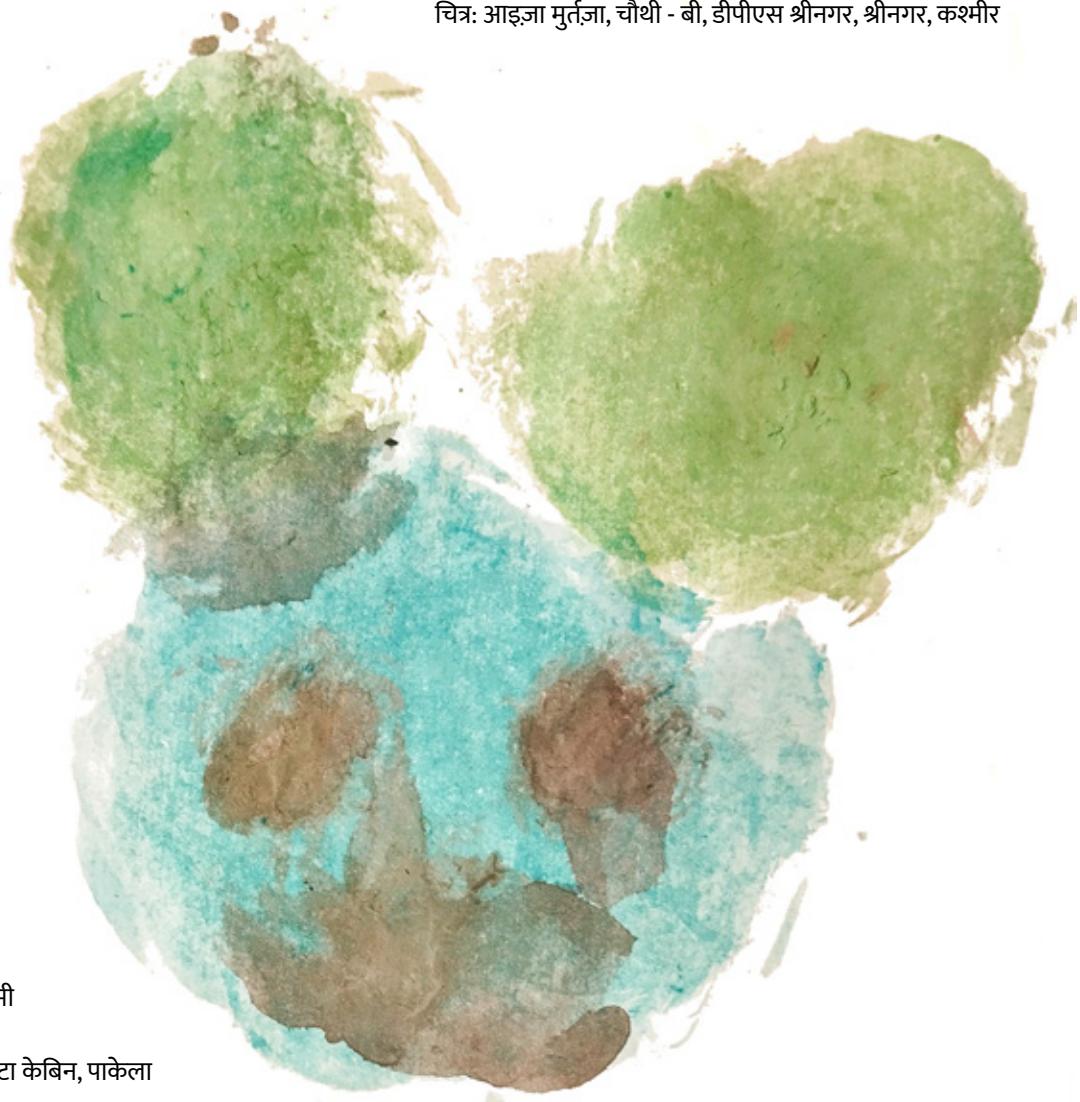
## बैलून

सेजल  
मुस्कान संस्था  
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक दिन मैं सिग्नल पर बैलून बेच रही थी। काली कार वाले भैया बोले, “हमारी कार को मत छुआ करो। तुम माँगनेवाले हो।” मैंने कहा, “तुम बड़े हो इसलिए घमण्ड खाते हो।” मुझे भूख लग रही थी। एक बाइक वाले भैया ने मुझसे बैलून लिया। और मुझे 500 रुपए का नोट दिया। मैंने 20 रुपए की सब्जी-पूड़ी खाई। बाकी पैसे मम्मी को दे दिए।

चित्र: आरणिया नियोलिया, चौथी, आर्यमन विक्रम बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ लार्निंग, हलद्वानी, उत्तराखण्ड





## उल्लू

कमलेश कुमार पोडियामी

छठवीं

शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला

सुकमा, छत्तीसगढ़

एक गाँव में उल्लू नाम का एक आदमी रहता था। सबको उल्लू बनाता था। वो बहुत चोर था और झूठ भी बोलता था। एक दिन उसे बहुत भूख लगी। खाने को कुछ इधर-उधर ढूँढ रहा था। पर उसे कुछ नहीं मिला। तभी वह एक डोकरा और डोकरी के घर जाता है। वहाँ जाकर दादी माँ-दादी माँ कहकर पुकारता है। तभी डोकरी बाहर निकलती है। वो डोकरी से झूठ बोलता है कि दादाजी को शेर पकड़ा है। डोकरी बहुत घबरा जाती है और पूछती है, “कहाँ पे, नदी के किनारे?” डोकरी वहाँ से भाग जाती है। उल्लू डोकरी के चले जाने के बाद अन्दर घुसकर खाना खाकर चले जाता है। उल्लू सबको उल्लू बनाकर घर-घर में खाना चुराके खाता था। एक दिन उल्लू आखिर फँस गया। गाँव वालों ने उसे पकड़कर खूब पीटा। तब से उल्लू अच्छा आदमी बना।



# मेरे बड़े होने की कहानी

हर्षद मिलमिले  
सातवीं  
ज़िला परिषद् ३. प्रा. शाला  
चकनिम्बाला, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

दिन भर खेत में काम करके मैं, पिताजी और माँ घर लौटने की तैयारी में थे। बैलगाड़ी में दिन भर जमा किया हुआ कपास हमने भर दिया। पिताजी ने बैलों को गाड़ी से जोड़ दिया। हम सब गाड़ी में बैठे। पिताजी ने गाड़ी हाँकना शुरू किया। खेत और गाँव के बीच काफी दूरी है। बाजू में जंगल भी है। हम बातें करते हुए मज़े-से घर लौट रहे थे। अचानक बैल बौखला गए। जाने क्या देख लिया था? ज़ोर-ज़ोर से भागने लगे।

एक बैल इतनी ज़ोर-से भागा कि वह गाड़ी से निकल गया। पिताजी सँभालने की पुरज़ोर कोशिश कर रहे थे। इस कोशिश में जैसे ही एक बैल गाड़ी से अलग हुआ, गाड़ी को ज़ोर-से झटका लगा और पिताजी गाड़ी से नीचे गिर गए। बैलगाड़ी का पहिया उनके सीने से होकर निकला। मैं और माँ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। माँ रोने लगी। मैं भी रोने लगा। दूसरा बैल गाड़ी को अकेले ही दौड़ा रहा था। उसने एक पेड़ से जाकर गाड़ी ठोक दी। और वो भी गाँव में अकेले भाग गया।



चित्र: कुणाल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं और माँ दौड़ते हुए पिताजी के पास पहुँचे। पिताजी धायल थे। माँ ने मुझे मदद माँगने गाँव भेजा। मैं दौड़ते हुए गाँव गया। लोगों को जमा कर ले आया। लोगों ने पिताजी को अस्पताल पहुँचाया। गाँव में पहुँचे बैल को खूँटे से बाँध दिया। मैं रात भर चाचा के घर पर था। दूसरे दिन एक आदमी ने हमारा दूसरा बैल भी खोजकर ला दिया।

पिताजी के बारे में मुझे कुछ पता नहीं हो पाया था। इसलिए मैं रो रहा था। इस बात को अब 2 साल हो रहे हैं। पर मेरे मन में ज़ख्म और डर अब भी ताज़ा है। अब मेरे पिताजी ठीक तो हो गए हैं। लेकिन उनकी पसलियाँ अब भी कमज़ोर ही हैं। खेत का सारा काम अब मैं और माँ ही देखते हैं।

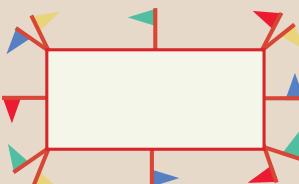
इस घटना के बाद मैं बड़ा हो गया हूँ। माँ भी यही कहती हैं।



2.

लो	शे	ख	म	ट	सू	बा	भा	लू
म	ग	र	म	च्छ	अ	क	घ	अ
ड़ी	ची	गो	रि	ल्ला	र	सि	ड़ि	ब
गि	ता	श	गै	डा	भे	ड़ि	या	ग
ल	च	म	गा	द	इ	के	ल	र
ह	साँ	के	छ	पां	में	ठ	क	घो
री	छि	प	क	ली	डा	हि	इ	डा
ब	क	री	छु	बं	द	र	बा	हा
ला	ते	दु	आ	भा	त	ण	ग्या	थी

7. उसने हरेक कोने पर 2 झाण्डियाँ लगाई और 1 झाण्डी बीच में लगाई, इस तरह:



8. इस क्रम की संख्याओं में यह पैटर्न है:  
 $(3 \times 3) + 3 = 12$   
 $(12 \times 3) + 3 = 39$   
 $(39 \times 3) + 3 = 120$   
इसलिए,  $(120 \times 3) + 3 = 363$



1. घड़ी की सुई की दिशा में चलते हुए पहली दो संख्याओं को जोड़ने और उसमें से 3 घटाने पर अगली संख्या मिलती है। इसलिए,  $11 + 16 - 3 = 24$

3.

फाल्गुनी

डॉली

बेनी

चार्ली

आर्या

एलीना

4. 6 व 4

5. नम्बर 3 वाली रॉड को, क्योंकि वह ज़मीन में ज़्यादा गहराई तक धँसी है।

6. यदि क्लू 1 सही है तो क्लू 4 भी सही हो जाएगा। और क्लू 4 सही होने पर क्लू 1 भी सही हो जाएगा। इसलिए ये दोनों ही क्लू गलत हैं। और ज़ारा 10 साल की नहीं है।

यदि क्लू 2 सही है तो क्लू 5 भी सही हो जाएगा। इसलिए सारा 9 साल की नहीं है।

क्लू 3 के बारे में अभी कुछ कहना मुश्किल है तो इसे बाद में देखते हैं।

यदि क्लू 5 सही है तो ज़ारा 11 साल की होगी क्योंकि क्लू 1 से हम पहले ही यह देख चुके हैं कि वह 10 साल की नहीं है। और इस स्थिति में क्लू 7 भी सही हो जाएगा। इसलिए क्लू 5 और 7 दोनों ही गलत हैं।

यदि क्लू 6 सही है तो सारा 10 साल की होगी और इस स्थिति में क्लू 8 भी सही हो जाएगा। इसलिए क्लू 6 व 8 दोनों ही गलत हैं।

यानी कि क्लू 3 सही है। और सारा 11 साल, ज़ारा 9 व लारा 10 साल की है।

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 व	स्ता	2 टि	3 क	4 सि
5 मृ	गी	6 फि	7 य	दृटी
8 चा	क	9 मी	न	ज्ञ
10 सा	टी		11 चा	ल
र		13 नी	ल	14 गा
15 रा	16 र	17 न	ग	18 मी
19 व	म	20 च	र	21 सा
22 ल	र	23 ज्ञ	गी	24 चि
खटी	ट		न	च

सुडोकू-67 का जवाब

5	9	4	7	2	8	3	1	6
6	1	2	3	9	5	8	7	4
3	7	8	6	1	4	5	2	9
8	4	1	5	7	3	6	9	2
7	2	5	8	6	9	1	4	3
9	6	3	2	4	1	7	5	8
4	8	9	1	3	7	2	6	5
2	5	7	4	8	6	9	3	1
1	3	6	9	5	2	4	8	7



## अब अन्तरिक्ष में फ्रेंच फ्राइज़

अभी तक हम सोचते थे कि पौधे कोई आवाजें नहीं करते। लेकिन तम्बाकू और टमाटर के पौधों के तनों के करीब माइक रखकर रिकॉर्डिंग करने पर समझ में आ रहा है कि वे भी विविध परिस्थितियों में आवाजें निकालते हैं – खासकर तनाव की स्थिति में। स्वस्थ पौधों से एक घण्टे में एक बार कोई आवाज़ सुनाई दे सकती है, लेकिन तनावग्रस्त पौधों से 30 बार तक।

लगभग 100 साल पहले भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने कहा था कि पौधों में ऐसी क्षमता हो सकती है। अब ये सिद्ध हुआ है। अभी इस पर शोध जारी है कि पोर चटकने जैसी आवाजें पौधे कैसे निकालते हैं या फिर इन आवाजों को अन्य जीव सुन रहे हैं या नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन बनने के बाद अन्तरिक्ष यात्री 6 महीनों से भी ज्यादा समय तक वहाँ ठहरकर काम करने लगे हैं। ऐसे में परिवार-दोस्तों की याद आती है और पृथ्वी के मज़ेदार व्यंजनों की भी। अन्तरिक्ष यात्रियों को इडली-चटनी जैसी चीज़ें तो खाने को मिलती हैं, पर अन्तरिक्ष में चीज़ों को तलना एक चुनौती रही है।

चुनौती इसलिए कि अन्तरिक्ष में कम गुरुत्वाकर्षण के कारण तलने पर आलू जैसी चीज़ों से भाप के बुलबुले चिपके रह जाते हैं। अलग न होने के कारण आलू कच्चे रह जाते हैं। अब एक मशीन तैयार की गई है जिससे ऐसा नहीं होता है। तो उम्मीद है कि जल्द ही अन्तरिक्ष यात्रियों को तली हुई पसन्दीदा चीज़ें भी खाने को मिलेंगी।



## पौधे भी बोलते हैं

# ਤਮੀਝ ਦੇ

The illustration depicts a brown and white dog with dark brown spots. The dog is wearing black sunglasses and a blue bandana with a white pattern. It is looking towards the right side of the frame. The background consists of a green gradient at the top, followed by several stylized, curved lines in shades of blue, orange, and pink that curve from the bottom left towards the top right.



प्रकाशक एवं मुद्रक रोजेश खिंदीरा द्वारा स्वामी रैक्स डी रोजारियो के लिए एकलत्या फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्म्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युरिटी प्राइ एलॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादकः विनता विश्वनाथन